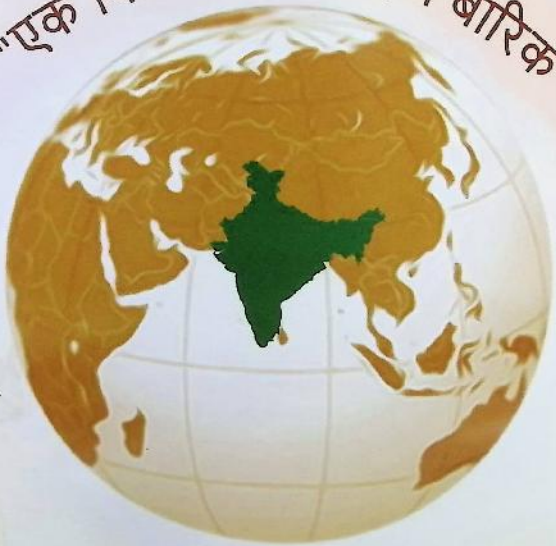
ੴ

श्री सतिगुरु राम सिंह जी महाराज

"एक पिता एकस के हम बारिक"



विश्व नामधारी संगत, श्री भैणी साहिब

अनादि कल से मानव शाश्वत शांति की खोज करता आ रहा है । प्रत्येक बुद्धिमान मनुष्य शांति का मूल - ज्ञान, शुभ कर्म , परस्पर सहयोग और प्राणी मात्र से प्रेम को ही मानता है । वर्तमान में मनुष्य इन धार्मिक और सदाचारात्मक भावनाओं के अभाव के कारण ही परस्पर विद्वेष और कलह से उत्पन्न दुःख भोगता है । आज विश्व में आधुनिक सुख सुविधाएँ और बौद्धिक ज्ञान पर्याप्त होने पर भी शांति, परस्पर सहयोग, सेवा और निस्वार्थ प्रेम के आभाव से मानव हृदय संकीर्ण हो गए हैं । धर्म अनुकूल जीवन ही मनुष्य समाज और विश्व को परस्पर प्रेम और शांति के योग्य बना सकता है । इसी लिए सभी धर्मों को अपने सिद्धान्तिक विभिन्नता में रहते होये भी, "सर्वे भवन्तु सुखिना", "वसुधैव कुटुम्बकम् " की भावना से काम करना चाहिए क्योंकि सभी एक ही परमात्मा की अंश हैं और सभी त्रिविध-तापों से शांति के उपासक हैं ।

शास्त्रों में सम्पूर्ण सृष्टि को एक परमात्मा का ही विविध रूपों में आविर्भाव माना जाता है । इसलिए प्राणी मात्र की सेवा करना परमात्मा की ही सेवा करना है । धर्म सार्वभौमिक होने से सब को जोड़ता है ना कि तोड़ता है। यही सभी धर्मो का सार है । सिख धर्म के संस्थापक श्री गुरु नानक देव जी ने अपना सद उपदेश एक ओंकार से शुरू किया । सभी जीवों का पिता और पालक एक परमात्मा ही है । गुरु नानक देव जी सभी धर्मो के पवित्र स्थलों पर यात्रा की लेकिन उन्होंने भेद-भाव रहित सब को हितभवना से उपदेश दिया "जो जिस धर्म को मानता है दृढ़ता और श्रद्धा से उस धर्म अनुकूल साधना करें । पाखंड और स्वार्थ भाव से की पूजा परमात्मा की कृपा का पात्र नहीं बनाती इसलिए पवित्रता, सत्यता और दृढ़ता से अपनी साधना करो" इसलिए सभी धर्मों के लोगों ने उनके उपदेश को श्रवण और ग्रहण किया । भाई मरदाना जी और राय बुलार जैसे मुसलमान भी उनके शिष्य बने ।

गुरु अर्जुन देव जी ने जाति, धर्म, मजहब और स्थान के भेद भाव को छोड़कर हिन्द भक्त और मुसलमान फकीरों की पवित्र वाणी को मानवता के कल्याणार्थ "श्री आदि गुरु ग्रन्थ साहिब" में समानभाव से संकलित किया । पंचम गुरूजी का मुस्लिम फ़कीर साई मियां मीर जी से अत्यंत प्रेम एक उदहारण है । गुरु हर गोबिंद साहिब जी ने मुस्लिम समाज के लिए मस्जिद का निर्माण करवाया था ।

नवम गुरु तेग बहादुर जी ने तत्कालीन शासक औरंगज़ेब द्वारा हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचारों को रोकने के लिए अपना शीश बलिदान किया। दसम गुरु गोबिंद सिंह जी ने धार्मिक कट्टरता के विरुद्ध भारतीय संस्कृति और सभ्यता के संरक्षण के लिए अपने चारों सपुत्रों सहित माता जी का बलिदान दिया। वहीं सत्य और धर्म रक्षा के लिए इन युद्धों में मुस्लिम फकीर बुद्दू शाह के सपुत्रों का बलिदान, गनी खान नबी खान, निहंग खान, दीवान टोडर मल और मोती राम मेहरा आदि हिन्दू मुस्लिम योद्धाओं के महान बलिदान भी अविस्मरणीय है।

सतगुरु प्रताप सिंह जी ने १९३४ ईस्वी में श्री गुरु नानक की अनुयायी सभी सम्प्रदायों को आपसी मतभेद छोड़कर सहचार और प्रेम भावना की दृढ़ता के लिए श्री भैणी साहिब में "गुरु नानक नामलेवा सर्ब सम्प्रदाय कांफ्रेंस" के रूप में एतिहासिक कार्य किया। इसके साथ ही १९४३ ईस्वी में "हिन्दू-मुस्लिम-सिख मिलाप कांफ्रेंस" कराकर सम्पूर्ण भारत ही नहीं बल्कि मानवमात्र को एक सूत्र में पिरोने के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया।

श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी ने सभी धर्म गुरुओं और विश्व कल्याणार्थ कार्य करने वाले सभी महापुरुषों और संस्थाओं के साथ अपने प्रेममय सम्बन्ध स्थापित किये और हमेशा परोपकार के लिए होने वाले कार्यों में अपना सहयोग दिया।
सतगुरु जी ने सम्पूर्ण जीवन बिना किसी भेदभाव के सबकी सहायता से सेवा-भाव से करते थे। कभी भी किसी को पराया नहीं मानते थे। प्रेम और सेवा को ही सदगुरु जी धर्म का सार मानते थे।

श्री सतगुरु उदय सिंह जी के संरक्षण और निर्देशन में विश्व शांति, परस्पर प्रेम, सहयोग और सद्भावना को समर्पित "सर्व धर्म सम्मलेन" का आयोजन ९ मार्च २०२३ ईस्वी को श्री भैणी साहिब में आयोजित हो रहा है। जिसका उद्देश्य जन-जन में यह सन्देश प्रसारित हो की, "सर्वे भवन्तु सुखिन" और "वसुधैव कुटुम्बकम्" की सभी कामना करें और सब इसी भावना से जीवन जीयें यही परमात्मा से प्रार्थना है।
इस कार्यक्रम में हमारे विनम्र निवेदन से उपस्थित हुए सभी महापुरुष, धर्म गुरु, समाज-सुधारक, और विशिष्ट जनों को नामधारी दरबार और विश्व नामधारी सांगत की ओर से 'स्वागत और धन्यवाद' देते हैं।



ਏਕ ਨੂਰ ਤੇ ਸਭੁ ਜਗੁ ਉਪਜਿਆ ਕਉਨ ਭਲੇ ਕੋ ਮੰਦੇ ॥੧॥

– ਭਗਤ ਕਬੀਰ ਜੀ

ਸਭੇ ਸਾਝੀਵਾਲ ਸਦਾਇਨਿ ਤੂੰ ਕਿਸੈ ਨ ਦਿਸਹਿ ਬਾਹਰਾ ਜੀਉ ॥੩॥

– ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ

ਹਿੰਦੂ ਤੁਰਕ ਕੋਊ ਰਾਫਜੀ ਇਮਾਮਸਾਫੀ ਮਾਨਸ ਕੀ ਜਾਤ ਸਬੈ ਏਕੈ ਪਹਚਾਨਬੋ ॥

– ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ

परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ ॥

(भगवद गीता, अध्याय ३)

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च ।
निर्ममो निरहङ्कारः समदुःखसुखः क्षमी ॥

(भगवद गीता, अध्याय १२)

उदारचरितानां तु वसुधैवकुटुम्बकम् ॥

(महोपनिषद्, अध्याय ६, मंत्र ७१)

ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः ।

(भगवद गीता, अध्याय १५)

ਵਿਸ਼ਵ ਨਾਮਧਾਰੀ ਸੰਗਤ (ਸ੍ਰੀ ਭੈਣੀ ਸਾਹਿਬ)

www.sribhainisahib.com